Hin 3B15b 2012-13 Thème 1

Mère Teresa de Calcutta

L'Express, Spécial Inde, décembre 2012-janvier 2013.

Née à Skopje (dans l'actuelle Macédoine), elle choisit de s'installer à Calcutta et obtient la nationalité indienne. Vêtue de son sari blanc de mauvais coton, Mère Teresa est l'exemple de la charité chrétienne. Elle fonde, en 1950, la congrégation des Missionnaires de la charité pour venir en aide aux enfants des rues de Calcutta. Lorsqu'elle reçoit le prix Nobel de la paix, en 1979, Mère Teresa jouit déjà d'une réputation de sainte vivante. Elle est béatifiée en 2003.

मदर टेरेसा का जन्म स्कोपजे में हुआ जो अब मैसिडोनिया में स्थित है। उन्होंने कलकत्ता आकर बसने का फ़ैसला किया और भारतीय नागरिकता अपनाई। वे हमेशा साधारण सूती कपड़े की बनी सफ़ेद साड़ी पहना करती थीं और इसाई उदारवाद का जीता जागता उदाहण थीं। उन्होंने सन १९५० में कलकत्ता की सड़कों में रहने वाले गरीब बच्चों की मदद करने के लिए मिशनरीज़ आफ़ चैरिटी नामक संस्था की स्थापना की। जब सन १९७९ में उन्हें नोबल शान्ति पुरुस्कार से सम्मानित किया गया उन्हें एक जीती जागती संत माना जाने लगा था। सन २००३ में उन्हें संत की उपाधि प्रदान की गई।

Hin 3B15b 2012-13 Thème 2

Une modernité importée d'Occident

L'Express, Spécial Inde, décembre 2012 – janvier 2013.

Amorcé il y a une vingtaine d'années, avec une décennie de retard par rapport à la Chine, le décollage économique du pays a permis la lente émergence d'une classe moyenne. Mais il a creusé, aussi, le fossé entre les riches et les autres. A Bombay, tandis que 6 millions d'habitants s'endorment chaque soir dans un bidonville, d'autres consultent les derniers cours de la Bourse sur leur iPad, dans des appartements dont le prix au mètre carré dépasse les tarifs pratiqués à Paris, Londres ou Shanghai…Pour autant, la révolution ne vient à l'esprit de personne, tant les Indiens considèrent que leur destinée terrestre, injustices et inégalités comprises, est entre les mains des dieux. C'est cette souriante résignation qui permet à une mégastar de Bollywood, Shahrukh Khan, d'expliquer, dans une récente interview, que son petit garçon fréquente désormais une école en Angleterre, mais qu'il compte faire l'aller-retour et lui rendre visite tous les quinze jours : il n'est même pas venu à l'esprit de l'acteur, semble-t-il, que ses millions de fans pourraient être surpris…

करीब बीस एक साल पहले यानी चीन से कोई एक दशक बाद शुरू हुए देश के आर्थिक उदारिकरण की बदौलत धीरे धीरे एक मध्य वर्ग सामने आया है। मगर साथ साथ इससे अमीरों और गरीबों (बाकी लोगों) के बीच का फ़ासला भी गहराया है। बम्बई में एक ओर तो जहां साठ लाख निवासी हर शाम झुग्गी झोंपड़ियों में सोते हैं, वहीं दूसरे शेयर बाज़ार के ताज़ा आंकड़ों पर अपने आइ पैड द्वारा नज़र रखते हैं और उनके अपार्टमेंटों की कीमत वर्ग मीटर के हिसाब से पेरिस, लंदन या शांघाई से भी ज़्यादा है। इसके बावजूद विद्रोह करने का विचार किसी के मन में नहीं आता क्योंकि हिन्दुस्तानियों का मानना है कि इस जन्म में उनकी तकदीर - भले ही उसमें कितनी भी नाइंसाफ़ी या ऊंचनीच क्यों क्यों न हो - भगवान के हाथों में है। राज़ी खुशी अपनी किस्मत पर सब कुछ छोड़ने की इसी भावना की बदौलत शाहरुख खान जैसे बौलीवुड के सितारे हाल ही में दिए गए एक इंटर्व्यू में बताते हैं कि उनका छोटा बेटा अब इंगलेन्ड के एक स्कूल में पढ़ता है पर उनका हर दो हफ़्ते में एक बार उससे मिलने जाने का इरादा है। मानो अभिनेता के मन में यह बात तक नहीं आई कि यह सुनकर उनके लाखों करोड़ों प्रशंसकों को हैरानी हो सकती है।

Hin3B15b 2013 Thème 3

Stupéfiant conteur des bas-fonds

L'Express, Spécial Inde.

Poète, musicien, l'iconoclaste Jeet Thayil savoure sur le tard le succès de son premier roman, Narcopolis. Un hommage très personnel au Bombay disparu des fumeries d'opium.

« Il y a quelque chose d'enivrant à Bombay qui frappe tous les visiteurs qui s'y rendent pour la première fois. » Assis en tailleur dans son salon coloré de Defence Colony, quartier huppé du sud de New Delhi, Jeet Thayil médite sur la frénétique mégapole indienne, inspiration et théâtre de Narcopolis. Présélectionné pour le prestigieux prix Booker, l'équivalent britannique du Goncourt, ce premier roman a fait sortir de l'ombre ce poète keralais, qui n'hésite pas à se décrire comme « relativement obscur ».

कवि और संगीतग्य / संगीतकार जीत थायिल अपने पहले उपन्यास नारकोपोलिस की सफ़लता का मज़ा ले रहे हैं. गुज़रे हुए दौर के अफ़ीमखानों वाले बंबई को उन्होंने इसमें अपनी निजी (अपने अंदाज़ में) श्रद्धांजलि दी है.

« बंबई में कुछ ऐसी नशा पैदा करने वाली चीज़ (एक किस्म का ऐसा नशा) है जो यहां पहली बार आने वाले हर इंसान पर बड़ा असर करती है ". दक्षिण दिल्ली के अमीर रिहाइशी इलाके डिफ़ेन्स कालोनी में अपने रंग बिरंगे घर के भीतर चौकड़ी मारकर बैठे हुए जीत थायिल उस हिन्दुस्तानी महानगर की तेज़ रफ़्तार वाली ज़िन्दगी का बयान रहे हैं जहां उनके उपन्यास की कहानी घटती है और जिससे वह प्रेरित है (जिसपर वह आधारित है). ब्रिटेन में गोनकूर के दर्जे का माने जाने वाले प्रतिष्ठित बुकर पुरुस्कार के लिए चुने गए उनके इस पहले उपन्यास से केरल के इस कवि को शोहरत मिली (हासिल हुई). अपने को काफ़ी हद तक अनजाना बताने (करार देने) से वे नहीं हिचकिचाते.

Hin3B15b 2013 Thème 4

Un sommeil de maharaja

L'Express, Spécial Inde.

Dans un pays qui ne compte pas plus d'hôtels que la ville de Shanghai, il est parfois difficile de dormir dans de beaux draps. Mais des nouveaux palaces aux écolodges, l'offre s'ouvre enfin.

Le Taj Mahal palace ? Pour le voir, vous devrez vous rendre à Agra, où se trouve le célèbre mausolée, mais aussi à Bombay (Mumbai), siège du non moins célèbre palace rococo qui domine la scène hôtelière indienne depuis sa construction, en 1903. Comme le Lake Palace d'Udaipur ou le Great Eastern Hotel de Calcutta, le Taj fait partie du gratin, la caste des hôtels « Heritage ». On y croise des palaces victoriens ou des palais de maharajas reconvertis en hôtels de luxe, tous à capitaux 100% indiens, où la déco évoque le passé fastueux de l'époque coloniale. Souvent bien placés, dans de beaux jardins ou au bord de la mer, ces havres de paix cultivent un art de vivre inspiré du passé. Les hôtels Heritage comptent aussi de nombreux *haveli*, authentiques petits palais ou manoirs transformés en maisons d'hôtes ou hôtels de charme. Certains sont de vrais bijoux, d'autres sont vétustes, mais presque tous sont pris d'assaut.

पूरे भारत में होटलों की संख्या अकेले शांघाई शहर से भी कम है. इसलिए रहने की सही तरह से व्यवस्था करना कभी कभी मुश्किल हो सकता है. पर नए महलों से लेकर पर्यावरण को मद्देनज़र रखते हुए बनाए गए इकोलाज के खुलने से अब नए विकल्प सामने आने लगे हैं.

क्या आप ताज महल देखना चाहते हैं ? अगर आपका मतलब इस नाम के मशहूर मकबरे से है तब तो आपको आगरा जाना होगा. मगर बंबई में सन १९०३ में बने इसी नाम के जाने माने होटल ने अपने निर्माण से हिन्दुस्तान में होटलों की दुनिया में अपनी शोहरत बरकरार रखी है. उदयपुर के लेक पैलेस और कलकत्ता के ग्रेट ईस्टर्न होटल की तरह इसे भी हैरिटेज होटलों की श्रेणी में गिना जाता है. इनमें अंग्रेज़ों के ज़माने के या महाराजाओं के द्वारा बनाए महल शामिल हैं जिन्हें आलीशान होटलों में तब्दील किया जा चुका है. ये होटल पूरी तरह हिन्दुस्तानी व्यवसाइयों के हाथों में हैं. इनकी सजधज अंग्रेज़ों के दौर की शानोशौकत (ठाठबाठ) याद दिलाती है. आमतौर पर ये सुविधाजनक जगहों में स्थित होते हैं – सुन्दर बगीचों के बीच या समुद्र तट के करीब. यहां आप शान्ति (सकून) से बीते हुए दिनों की जीवनशैली का मज़ा उठा सकते हैं. हैरिटेज होटलों में कई हवेलियां, छोटे महल और ठिकाने भी शामिल हैं जहां आप यहां रहने वाले परिवारों के साथ / के मेहमानों के तौर पर / बनकर ठहर सकते हैं. इनमें से कुछ तो एकदम (सही मायने में) हीरे हैं पर दूसरों की हालत ज़रा खस्ता है. पर सभी में रहने के लिए मुसाफ़िर बेताब रहते हैं.

Hin3B15b 2013 Thème 5

Naviguer sur le fleuve Hoogly

www.fleuves-du-monde.com

Spécialiste des voyages au fil de l'eau, Fleuves du Monde, titulaire de la certification Tourisme Responsable depuis 2010, promeut un tourisme permettant un développement durable pour le pays d'accueil et travaille à la préservation des cultures locales. Le voyagiste propose une croisière le long de l'Hooghly, de Farraka à Calcutta. Cet affluent du Gange parcourt la région du Bengale occidental, une zone chargée d'histoire pour les Européens comme pour les Indiens. Le séjour commence par une journée à Calcutta. Les passagers sont ensuite accueillis par les membres d'équipage à bord du *Sukapha*, un bateau de style ancien qui compte douze cabines privatives, un restaurant, une terrasse et une bibliothèque. Pendant six jours, les voyageurs voguent de village en village, au gré des sites à visiter. C'est à bord d'un *rickshaw* qu'ils découvrent les charmes des anciennes villes coloniales de Chandernagor et Barrackpore. Grâce aux arrêts fréquents du *Sukapha*, ils s'immergent dans la culture et les coutumes des habitants de la région et visitent des ateliers de fabrication de saris et de *bidis*.

फ़्लव द्यू मोन्द नदी पर्यटन की विशेषग्य (gy) है। सन २०१० में उसे ज़िम्मेदार पर्यटन का सर्टिफ़िकेट मिला। संस्था (कंपनी) ऐसी पर्यटन गतिविधियों का आयोजन करती है जो मेहमान देशों में टिकाऊ विकास को बढ़ावा देती हैं और स्थानीय संस्कृतियों को सुरक्षित रखने के लिए काम करती है। संस्था अपने ग्राहकों के लिए हुगली नदी पर फ़रक्का से लेकर कलकत्ता तक नौका विहार आयोजित करती है। गंगा की यह सहायक नदी पश्चिम बंगाल से होकर गुज़रती है। यह इलाका युरोपीय और हिन्दुस्तानी दोनों लोगों के लिए ऐतिहासिक महत्व रखता है। सफ़र की शुरुआत में मुसाफ़िर कलकत्ता में एक दिन गुज़ारते हैं। फिर उनका सुकाफा नामक नाव पर स्वागत होता है। पुरानी शैली में बनी इस नाव में मुसाफ़िरों के लिए अलग अलग कमरे, भोजनालय, बालकनी और पुस्तकालय हैं। छह दिन के दौरान वे गांव गांव जाकर अपनी पसन्द की जगहों में घूमते हैं। वे रिक्शा पर बैठकर चंद्रनगर और बैरकपुर जैसे पुराने, अंग्रेज़ों के ज़माने के शहरों में सैर करते हैं। सुकाफा नाव जगह जगह रुकती है और इस तरह वे स्थानीय निवासियों की संस्कृति और परंपराओं के संपर्क में आते हैं और साड़ी और बीड़ी बनाने वाले कारखानों में जाने का मौका पाते हैं।

HIN 3B15B 2013 THEME 6

LES MILLE ET UNE EPICES DU "MASALA MARKET"

15 JUILLET 2010, TEXTE: CARMELINA BELLINI

Le temps des caravanes s'ébranlant sur la route des épices, en partance de Chine et d'Inde pour rejoindre l'Europe lointaine, est bien révolu. Pourtant reste encore une empreinte magique de cette époque, incrustée au sein de Khari Baoli, le "masala market" de New Delhi.

Khari Baoli, situé dans le prolongement occidental de Chandni Chowk, regorge de marchands d'épices, de thé et de fruits secs, en gros et au détail. Ici, les produits, aux multiples couleurs et parfums plein de promesses, s'alignent en équilibre précaire, savamment calculé, dans les petites échoppes ouvertes qui bordent les ruelles bondées …

"Je vends des épices pour la cuisine, tels de la cardamone ou du safran, mais aussi des herbes ayurvédiques utilisées comme traitement médical", nous indique Saurav. "J'ai du réglisse par exemple, c'est très bon pour la santé, et ça rend heureux!" lance Meenu. La jeune femme nous montre également du Hara et du Katira, utilisés pour lutter contre des problèmes digestifs …

"Nous exportons beaucoup à l'étranger, principalement aux Etats-Unis et au Royaume-Uni, mais aussi en Afrique du Sud, aux Pays-Bas et en France, dans le quartier de la Gare du Nord", nous explique-t-il, tout en nous faisant sentir ses gousses de vanille doucement odorantes en provenance du Kerala (Sud).

"Nous importons du gingembre de Chine, de la cannelle du Vietnam et d'Indonésie, ou encore du poivre du Sri Lanka", nous confie Anshu Kumar. Car même si l'Inde est riche en épices, il est parfois moins cher d'en importer, pour une qualité supérieure

एक ज़माना था जब मसालों से लदे कारवां चीन से शुरू होकर हिन्दुस्तान से गुज़रते हुए युरोप के दूर दराज़ के मुल्कों में अपना सामान ले जाया करते थे। वे दिन तो अब नहीं रहे पर उस दौर के मज़ेदार माहौल का अंदाज़ा आज भी दिल्ली के मसालों के बाज़ार खारी बाओली में जाकर लगाया जा सकता है।

चांदनी चौक के पश्चिमी छोर पर स्थित खारी बाओली मसालों, चाय और मेवों की दुकानों से भरा पड़ा है जहां थोक और खुदरा दोनों सामान बेचा जाता है। चहल पहल से भरी सड़कों के किनारे बनी छोटी छोटी खुली दुकानों में रंग बिरंगी और खुशबूदार चीज़ें सावधानी से एक दूसरे पर रखी देखी जा सकती हैं।

'हमारे यहां खाना बनाने में इस्तमाल होने वाले मसाले बेचे जाते हैं जैसे बड़ी इलायची और केसर और इनके साथ साथ इलाज में काम आने वाली आयुर्वेदिक जड़ी बूटियां भी ', सौरव हमें बताता है। 'अब देखिए मिसाल के तौर पर हमारे पास मलैठी है जो सेहत के लिए बहुत फ़ाएदेमंद होती है और तबीयत को खुश करती है', मीनू हमें बताती है। वह हमें पाचन की मुश्किलों को दूर करने के लिए लिए जाने वाली हड़ और कटिर (?) जैसी चीज़ें भी दिखाती है। .....

दक्षिण भारतीय राज्य केरल से आए धीमी धीमी महक वाले वनीला के गुच्छे हमें सुंघाते हुए वह कहता है 'हमारा सामान विदेशों में बहुत निर्यात होता है खासतौर पर अमरीका और इंगलैन्ड में। पर उनके अलावा दक्षिण अफ़्रीका हौलैन्ड और फ़्रांस में गार द्यू नौर के इलाके में भी'।

'हम चीन से अधरक, वियतनाम से दालचीनी या फिर श्री लंका से काली मिर्च का भी आयात करते हैं' अन्शू कुमार हमें जानकारी देते हैं। वैसे तो भारत में मसालों की कोई कमी नहीं है मगर कभी कभी बेहतर क्वालिटी का सामान बाहर से मंगना ज़्यादा सस्ता पड़ता है'।

Hin3B15b 2013 Thème 7

Comment L'Oréal s'adapte au marché indien

Corinne Scemama (L'Express) - 19/09/2012

Les prix bas ne suffisent pas. L'Oréal a dû aussi se fondre dans la tradition. Contrairement aux Chinoises, aspirant au luxe européen, les Indiennes désirent avant tout conserver leurs coutumes. Soucieuses de leur santé, elles plébiscitent les produits naturels. D'où l'accélération des recherches en laboratoire sur le safran, le yaourt ou le *neem* (margousier). L'Oréal a déjà lancé Fructis 2 en 1, shampoing et huile (essentielle dans la médecine ayurvédique), mais aussi des crèmes éclaircissantes - les Indiens à la peau foncée sont considérés comme faisant partie de la classe inférieure (la caste des Intouchables). L'Oréal a également modernisé le *kajal* en créant Colossal Kajal, un crayon résistant à l'humidité. Une touche technologique qui fera, selon le groupe, la différence sur ce marché disputé. La décision de vendre du talc (95 % des Indiennes en utilisent pour se protéger de la chaleur ambiante) ne sera prise que lorsque les chercheurs auront mis au point une formule innovante.

कीमतें कम रखना ही काफ़ी नहीं है। लोरियाल को स्थानीय तौर तरीकों के अनुसार भी अपने आप को ढालना पड़ा। वहां (एक ओर) जहां चीनी महिलाएं युरोपीय ऐशओआराम को पाने की कामना करती हैं, भारतीय स्त्रियों को हर हालत में अपनी परम्पराएं बरकरार रखनी हैं। उन्हें अपनी सेहत की फ़िक्र है और वे प्राकृतिक पदार्थों के इस्तमाल मे पक्ष में हैं। यही वजह है कि कंपनी की प्रयोगशालाओं में केसर, दही और नीम पर शोध किया जा रहा है। लोरियाल पहले ही फ़्रुक्टिस टू इन वन बाज़ार में ला चुकी है जो कि शैम्पू और आयुर्वेदिक दवाओं में काम आने वाला तेल होने के साथ साथ त्वचा का रंग गोरा करने वाली क्रीम भी है। सांवले रंग के हिन्दुस्तानियों को नीची जाति का समझा जाता है। कंपनी ने काजल को भी एक नया रूप दिया है। कोलोसल काजल एक पैन्सिल के रूप में आता है जिसपर उमस का असर नहीं पड़ता। कंपनी का कहना है कि इस तकनीकी पहल के बल पर वह बाज़ार पर अपनी पकड़ मज़बूत कर सकेगी। ९५ प्रतिशत हिन्दुस्तानियों द्वारा गरमी से बचने के लिए लगाए जाने वाला टेल्कम पाऊडर बेचने का फ़ैसला तभी लिया जाएगा जब शोधकर्ता एक नया फ़ारमूला तैयार कर लेंगे।

HIN3B15b 2013 Thème 8

L'Inde nouvelle s'impatiente

Le monde diplomatique, Bénédicte Manier, février 2013

Des manifestations monstres pour protester contre un viol. Du jamais-vu à New Delhi, où, à plusieurs reprises, des dizaines de milliers de femmes et d'hommes se sont rassemblés pour clamer leur révolte après le calvaire subi par une jeune fille de 23 ans, décédée le 28 décembre 2012 des suites de ses blessures.

Si les jeunes de la classe moyenne indienne sont descendus dans la rue, c'est d'abord parce que ce crime a touché une des leurs : une étudiante issue d'une famille paysanne modeste venue suivre des cours dans la capitale, à l'image de cette génération en pleine ascension sociale. Une génération née avec la mondialisation, qui a parfois étudié à l'étranger et qui est financièrement indépendante. Une génération qui, également, a commencé à expérimenter l'égalité entre les sexes, tant à l'université (où les filles sont aussi nombreuses que les garçons) qu'au travail. Le haut niveau de croissance de la dernière décennie a en effet ouvert aux femmes des possibilités d'emploi. Outre le domaine public, où l'on comptait 2,9 millions d'actives en 2005, elles ont investi les secteurs qui ont le vent en poupe : les services technologiques, aériens, l'industrie pharmaceutique... Elles représentent par exemple 32 % des 3 millions de salariés officiels des technologies de l'information et des services informatiques. Leur part dans la population active est d'ailleurs passé de 19,7 % en 1981 à 25,7 % en 2011.

एक युवती के बलात्कार के विरोध में दिल्ली में ज़बरदस्त प्रदर्शन आयोजित हुए हैं। ऐसा वहां पहले कभी भी नहीं देखा गया था। एक वारदात में बुरी तरह घायल २३ वर्षीय लड़की के २८ दिसम्बर २०१२ को दम तोड़ देने के बाद शहर में कई मौकों पर हज़ारों-लाखों की संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने इकट्ठा होकर अपना गुस्सा ज़ाहिर किया।

मध्य वर्ग के युवाओं द्वारा सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करने की एक वजह यह भी है कि इस हादसे की शिकार लड़की उन्ही में से एक थी। एक साधारण किसान परिवार में जन्मी वह छात्रा आजकल आगे बढ़ती हुई इस नई पीढ़ी के दूसरे सदस्यों की तरह अपनी पढ़ाई करने राजधानी में आई थी। भूमन्डलीकरण के इस ज़माने में पैदा हुए ये नवयुवक कभी कभी अपनी पढ़ाई के लिए विदेश जा चुके होते हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं। विश्वविद्यालयों में - जहां लड़कियों की संख्या लड़कों जितनी है - और कार्यस्थलों में इन्होंने महिलाओं और पुरुषों के बीच बढ़ती बराबरी को अनुभव किया है। पिछले दशक के दौरान हुए तेज़ आर्थिक विकास से महिलाओं के लिए भी रोज़गार की संभावनाएं बढ़ी हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के अलावा – जहां सन २००५ में उनकी संख्या २९ लाख थी - उन्होंने नए ज़माने के उभरते क्षेत्रों जैसे टैकनालाजी, विमान उद्योग और दवा उद्योग में भी अपनी जगह बना ली है। मिसाल के तौर पर सूचना प्रौद्योगिकि के क्षेत्र में आधिकारिक रूप से काम कर रहे ३० लाख लोगों में से ३२ प्रतिशत महिलाएं हैं। कामकाजी आबादी में उनकी भागदारी १९८१ में १९.७ से २०११ में २५.७ तक पहुंच गयी है।

Hin3B15b 2013 Thème 9

Inde: 532 millions de dollars pour lutter contre sécheresse et inondations

Le Nouvel Observateur, 13-03-2013

Le gouvernement indien a annoncé mercredi avoir débloqué près de 532 millions de dollars pour sept Etats affectés par la sécheresse ou les inondations, dont près la moitié de cette enveloppe destinée à l'ouest du pays qui souffre de la pire sécheresse depuis 1972.

Le ministre de l'Agriculture, Sharad Pawar, a indiqué que le comité ministériel qu'il préside avait donné son feu vert au déblocage de près de 29 milliards de roupies, dont 12 milliards pour l'Etat du Maharashtra (ouest).

"La sécheresse au Maharashtra est la pire depuis 40 ans", a-t-il souligné lors d'une conférence de presse.

Privés d'eau potable, ruinés par la mort du bétail et le dépérissement des cultures qui les menacent de famine, des millions d'Indiens subissent une sécheresse historique dans quelque 10.000 villages de l'ouest après deux faibles moussons successives.

Plus de sept Indiens sur dix vivent de l'agriculture et pour eux la mousson est vitale car deux-tiers des terres cultivées ne sont pas irriguées et dépendent entièrement de la pluie.

L'an dernier, la mousson fut tardive dans l'ouest de l'Inde et les pluies du mois de juin, normalement le plus humide, ont été insuffisantes, selon l'agence nationale de météorologie.

Outre le Maharashtra, l'aide gouvernementale ira aux Etats du Gujarat, du Kerala, de l'Andhra Pradesh, de l'Himachal Pradesh, du Sikkim et de l'Uttarakhand pour lutter contre les inondations et les glissements de terrains.

भारतीय सरकार ने बुधवार को देश के सात सूखा पीड़ित या बाढ़ ग्रस्त राज्यों के लिए ५३ करोड़ डालर की सहायता राशी मुहैया कराने की घोषणा की है। इसमें से तकरीबन आधी देश के पश्चिमी इलाकों को दी जाएगी जो सन १९७२ से सबसे भीषण सूखे से जूझ रहे हैं।

कृषी मंत्री शरद पवार ने संकेत दिया है कि उनके नेतृत्व में गठित मंत्रीमंडलीय आयोग ने २.९ अरब रुपये मूल्य की राहत मंज़ूर कर दी है जिसमें से १.२ अरब सिर्फ़ महाराष्ट्र राज्य के लिए ही दिए जाएंगे।

एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में पिछले ४० सालों में इतना ज़बरदस्त सूखा देखने में नहीं आया था।

लगातार पिछले दो सालों के दौरान हुए कमज़ोर मानसून के कारण देश के पश्चिमी भाग के करीब १०००० गांवों में ऐतिहासिक सूखा पड़ा है। इसके नतीजतन करोड़ों भारतीय लोग पीने के पानी से वंचित हैं, उनके मवेशी मर गए हैं और उनकी फ़सलें बरबाद हो गई हैं जिससे उन्हें आकाल का सामना करना पड़ सकता है।

भारत की सत्तर प्रतिशत आबादी अपनी रोज़ी रोटी कमाने के लिए कृषि क्षेत्र में काम करती है और उसके लिए मानसून का सही समय पर आना बहुत ज़रूरी है क्योंकि खेती बाड़ी के लिए इस्तमाल की जाने वाली दो तिहाई ज़मीन की सिंचाई नहीं होती और वह मानसून पर ही निर्भर है।

देश के मौसम विभाग के अनुसार पिछले साल भारत के पश्चिमी भाग में मानसून देर से आया और जून के महीने में जिसमें आमतौर पर सबसे ज़्यादा बारिश होती है, पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं बरसा।

महाराष्ट्र के अलावा सरकारी सहायता गुजरात, केरल, आन्ध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तरांचल को भी दी जाएगी ताकि वे बाढ़ और भूस्खलन का सामना कर सकें।

Hin3B15b 2013 Thème 10

Le plus vieux papa du monde a 96 ans

Clémentine Rebillat - Parismatch.com

Un Indien est devenu père à 96 ans. L'homme, marié à une femme de 54 ans, bat son propre record. En 2010, il était déjà devenu le plus vieux papa du monde en accueillant son premier enfant.

Il n'est jamais trop tard pour fonder une famille et Ramjit Raghav l'a bien compris. Cet Indien de 96 ans vient de devenir père pour la seconde fois. Sa femme de 54 ans, Shakuntala, ans a accouché le mois dernier, rapporte le «Daily Mail». «Que voulez-vous que je fasse? C'est la volonté de Dieu. Il voulait que j'ai un autre fils», a confié le «jeune papa» au quotidien britannique. En 2010, Ramjit avait déjà fait la Une des médias en accueillant son premier garçon à 94 ans.

Cet ancien agriculteur a raconté que lors de l'accouchement de sa femme à l'hôpital public, les médecins s'étaient moqués de lui. «Ils ont ri mais ils étaient surtout très surpris», s'est-il souvenu. Mais le père de famille n'a que faire du jugement des gens. Pour lui, le plus important est d'assurer une belle vie à ses fils. «J'ai été un fermier toute ma vie. Je veux qu'ils deviennent des gens plus importants, a-t-il expliqué. C'est bien que j'ai un autre enfant maintenant. Même si l'un d'eux meurt, Dieu nous en préserve, quelqu'un portera toujours mon nom de famille.»

एक हिन्दुस्तानी आदमी ९६ साल की उम्र में बाप बन गया है। एक ५४ वर्षीय महिला से विवाहित इस व्यक्ति ने अपना ही रिकार्ड तोड़ दिया (डाला) है। २०१० में वह उस समय दुनिया का सबसे बूढ़ा बाप बन गया (चुका) था जब उसकी पहली संतान पैदा हुई थी। (२०१० में अपनी पहली संतान के जन्म के बाद वह पहले ही दुनिया का सबसे बूढ़ा बाप बन चुका था)

घर-बार बसाने (घर गृहस्ति शुरू करने) के लिए कभी भी देर नहीं होती और रामजीत राघव ने इस बात को समझ लिया है (इस बात से वाकिफ़ है)। ९६ वर्षीय यह हिन्दुस्तानी दूसरी बार बाप बना है। डेली मेल अख़बार में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक उसकी ५४ वर्षीय बीवी शकुन्तला ने पिछले महीने ही एक बच्चे को जन्म दिया है। 'क्या करूं, ऊपर वाले की यही मर्ज़ी है (को यही मंज़ूर था)। वह चाहता था (उसकी यही इच्छा थी) कि मेरा एक और लड़का हो', नए नए (नए नवेले) बाप बने रामजीत ने अंग्रेज़ दैनिक को बताया। २०१० में ९४ साल की उम्र में उनके पहले लड़के के जन्म की ख़बर समाचार पत्रों के पहले पन्ने पर छपी थी।

पहले किसान रहे रामजीत ने बताया कि सरकारी अस्पताल में जब उसकी बीवी ने बच्चे को जन्म दिया तो डाक्टरों ने उसका खूब मज़ाक उड़ाया। वे हंसे पर इससे भी ज़्यादा उन्हें हैरानी हुई, वह याद करता (उसे याद) है। पर लोगों की बातों की उसे कोई परवाह नहीं। उसके लिए सबसे अहम बात है अपने बच्चों के लिए एक अच्छी ज़िन्दगी की तैयारी करना (का ठीक से पालन पोसन करना)। 'मैं तो सारी ज़िन्दगी किसान ही रहा। मैं चाहता हूं कि वे आगे चलकर बड़े आदमी बनें। यह अच्छा हुआ कि मेरा एक और बच्चा हुआ है। भगवान करे ऐसा न हो पर अगर उनमें से एक मर भी जाए तो कोई न कोई तो परिवार का नाम चलाएगा'।